Subject - Maithili (IV th semester)
Paper code - CC-15, MTL 541
Topic - 'Yaatree'k Kavita mein
Pragativaad
Format - PDF

Name/contact - Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile - 9661819662
email - drsudhirjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

'यात्री'क कविता मे प्रगतिवाद

काल मार्क्सक समानताक सिद्धान्त साहित्य मे प्रगतिवाद कहाओल। मार्क्सक सिद्धान्तक मूल रूप छल समाज मे विद्यमान शोषक ओ शोषितक भेद कें पाटब, एहन व्यवस्थाक अन्त करब जाहि मे किछु व्यक्ति विलासमय जीवन व्यतीत करैत छथि आ कतेको कें पेटक रोटी पर सेहो आफद रहैत छैक। साहित्य मे प्रगतिवाद मूलत: क्रान्तिकारी भावनाक वाहक थिक। एहि वाद मे दलित-मर्दित श्रमिकवर्गक जयगान होइत अछि, तथाकथित सभ्य, धनवान ओ शोषकक विरुद्ध क्रान्तिकारी स्वर उठाओल जाइत अछि, परम्परा समर्थित जीवन-मूल्य आ साहित्यक प्रति विद्रोह देखाओल जाइत अछि एवं सामाजिक विविध विषमता ओ विसंगतिक उल्लेख रहैत अछि।

मैथिली साहित्य मे प्रगतिवादी रूपी शिशुक जन्म बाबू श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क काव्य सँ भेल मुदा अल्पायु होएबाक कारणेँ ओ ओहि शिशुक पालन-पोषण नहि कए सकलाह। ओकर लालन-पालन कए पैघ कएल श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। दोसर शब्द मे श्री भुवनजीक लेखनी सँ उत्पन्न प्रगतिवाद रूपी शिशुक जीवन कें श्री यात्री अपन रस-प्रतिभाक सिंचन सँ पल्लवित-पुष्पित कएल। यात्रीजी मनसा-वाचा-कर्मणा प्रगतिवादक समर्थक छलाह, ओहि लेल पूर्णत: समर्पित छलाह। यद्यपि व्यक्ति, संस्था, शिविर ओ समरनीतिक विषय मे हुनक आस्था अवश्य समयानुसार परिवर्तित होइत रहल अछि, मुदा मूलभूत मान्यता मे हुनक आस्था कतहु कनेको डोलल नहि अछि। वस्तुत: हुनक अपन जीवन सेहो प्रगतिवादी कविक रचना मे बन्द होएबा योग्य अछि।

यात्रीक काव्य-संग्रह चित्रा (1949) मे संगृहीत 'परम सत्य' शीर्षक कविता मैथिली साहित्य मे प्रगतिवादक घोषणा-पत्र कहल जाए सकैत अछि। एहि रचना मे कवि परम्परागत सत्य पर बड़ कड़गर चोट करने छथि। भारतीय परम्परा प्राचीने काल सँ 'ब्रह्मं सत्यं जगन्मिथ्यं' क उद्घोष करैत आयल अछि परञ्च यात्रीजी एकर विपरीत 'जगत सत्यं ब्रह्मं मिथ्या' प्रमाणित करने छथि। यथा—

फूसि समटा थीक
थिक महाजंजाल
फूसि ब्रह्म-विष्णु दश दिक्पाल
फूसि श्रुति-स्मृति

Scanned with CamScanner

– – – – – – –

सत्य थिक ई माटि
सत्य थिक ई पानि
सत्य थिक संसार
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
हम, अहाँ, ओ, ई, थिकहुँ सब गोटे बड़का सत्य।

कवि कें मात्र अपन परम्परेटा सँ द्वेष नहि छन्हि अपितु ओ एकर प्रवर्तक पूर्वज लोकनि पर सेहो आघात करैत छथि—

पुरखा लोकनि रहथि महात्मा
हमरा सभ छी निरनात्मा
पलरि-पलरि भेल जाइछ अदृश्य
शिखा-सूत्र, पाँजि-पाटि, गोत्र
गनइ छथि ब्रह्मा शूद्रक महिम्नः स्तोत्र
चाटय मुहँ रेघाकँ....
दड़िभंगा-सहर्सा-पूर्णिआ-भागलपुर
सभकें एक करत धाडि धूडि काल बलीबर्दक खुर[2]

यात्रीजीक काव्य मध्य कतहु शोषित-पीड़ितक दयनीय दशाक चित्रण भेल अछि तँ कतहु शोषकवर्गक विरुद्ध शोषितक क्रान्तिकारी भावना द्रष्टव्य होइत अछि आ कतहु-कतहु शोषण सँ मुक्ति पएबाक आशा। एक दिश ओ 'समान श्रम, समान भोग' केर समर्थन कएल अछि तँ दोसर दिश श्रमिकवर्ग कें एकसूत्र मे संग्रथित होएबाक आह्वान करैत छथि। एकठाम जँ ओ स्वार्थान्ध नेता लोकनि पर कटाक्ष कएलन्हि अछि तँ दोसर ठाम हुनका समस्त देश मे 'त्रिमूर्ति'क दर्शन होइत छन्हि। कहबाक अभिप्राय जे यात्रीजी मे प्रगतिवादी कविक भावना कुटि-कुटि कए भरल छलन्हि। एतेक धरि जे वीरपूजा सम्बन्धी रचना मे सेहो हुनक ई भाव जागृत भए उठल अछि।

कविक 'गोठ-बिछनी' शीर्षक कविता मे छीन-हीन एकटा छोट बालिकाक बड़ मार्मिक चित्रण भेल अछि। बाध-बोन मे पथिआ नेने बनगोइठा बिछैत एहि बीत भरिक नेनाक पहिरन-ओढ़न अत्यन्त दयनीय छैक—

मैल पुरान पचहत्थी नुआ
सेहो फाटल चेफड़ी लागल
– – – – –
बगड़ा जेना लगाबए खोँता
तेहने रुच्छ केस छउ तोहर[3]

Scanned with CamScanner

एक तँ नूआ पचहत्थी दैक आ सेहो दड़ढ़ नहि, येफड़ी लागल तिनशताक येफड़ी सभ। 'रुच्छ केस' ओ 'बगड़ा जेना लगाबए खोंता' आर्थिक विषमता सँ उद्भूत विनशताक उत्कट स्थिति केँ समक्ष अनैत अछि। गोठबिड़नी केँ बहुत दिन सँ तेल लेबाक सौभाग्य नहि भेटलैक अछि आ तेँ ओकर केश 'रुच्छ' छैक। ई कहिया सँ थकड़लो ने गेलैक अछि। अस्त-व्यस्त केश केँ 'बगड़ाक खोंता' क बिम्ब द्वारा अभिव्यक्त कए कवि पाठक मे तीव्र सम्वेदना जगाओल अछि।

कवि यात्री 'कविक स्वप्न' मे सामन्तवादी काव्य व्यवस्था पर कठोर आघात कएल आ कविता केँ गनल-गूथल ओसभन लोकक मनोरञ्जनक साधन नहि मानि, दीन-हीन दलित-पीड़ितक पक्षधर बनबाक साधन मानल। स्वप्नावस्था मे सरस्वती करुणा-विजलित स्वर मे कवि केँ कहि रहल छथिन्ह –

तोहर मन दौड़ैत छह कोठाक दिश
पैघ-पैघ धनीक दिश दरबार दिश?
कए रहल छह अपन प्रतिभा खर्च तोँ
ताहि व्यक्तिक सुखद स्वागत-गान मे
जकर रैयति होहि पाड़ि कनैत छइ
घर आङन खेत औ खरिहान मे[4]

मनुष्य जतए पीड़ित अछि, जतए अपन एवं समाजक नव रूपरेखाक लेल संघर्षशील अछि, से चाहे तरौनीक सरयुग राउत होअए किंवा नगरक 'रिक्साचालक' – प्रगतिशील कविक वाणी ओतए अनायासे पहुँचि जाइत अछि। 'पसेनाक गुण-धर्म' शीर्षक कविता मे रिक्साचालकक पीठ दिशुका फाटल, तार-तार भेल गंजी पसीनाक गुण-धर्म केँ प्रमाणित करैत अछि। ओकर घाम नरवाहनक प्राणशक्तिक द्योतक अछि। ई ओ भूमिका थिक जतए पूर्व-पश्चिमक सीमा मिथ्या होइत छैक, ओतए सत्य थिक मनुष्यक जीवित प्रतिमा मात्र। कविक यथार्थवादी दृष्टि अपन समस्त परिवेश मे मात्र 'कंकाले-कंकाल' देखैत अछि। शिशु, तरुण, तरुणी, वृद्ध, वृद्धा आ नवकिशोरीक कारी पिण्डश्याम आकृतिक कंकाल, दू मुट्ठी अन्नक लेल मालगोदाम लग भरि-भरि आँपुर धूरा उठबैत कंकाल। द्रष्टव्य थिक 'कंकाले-कंकाल' कविताक किछु पाँती –

सप्लाइ विभागक चपरासीक नजरि थाहैत कंकाल
दू-दू टा प्लेटफार्म सोझाँसोझी टपैत
गोड़ पाँचेक कुलीक
एक मिसिया मात्सर्य, एकरती सहानुभूति
अनायास हासिल करैत कंकाल
जेठक दुपहरिया मे जरैत कंकाल[5]

Scanned with CamScanner

सामाजिक जनचेतना केँ वाणी देनिहार कवि यात्रीक किछु कविता मे निम्नवर्गीय संघर्षशील चेतना समुन्नत रूपेँ प्रगट भेल अछि। महाजनी चट्टान सँ ठोकर खाइत, भयंकर संघर्षक आगि मे जरैत सर्वहारा केँ समर्थन दैत यात्रीक कविता साम्राज्यवादी संस्कृतिक विनाशक प्रयास केँ जेना चुनौती दैत अछि। एहि सन्दर्भ मे 'सुखैल टटैल एकटा बेङ' शीर्षक कविताक निम्न पाँती द्रष्टव्य थिक —

आइ अथवा काल्हि अथवा परशू
हेबेटा करत वृष्टिपात....
कृशकाय ई दर्दुर बेचारे
ने जानि कती काल धरि
रहताह तकैत आकाश दिश।
अहेतुक नहि थीक हिनक ई त्राटक
हेबेटा करत वृष्टिपात
आइ अथवा काल्हि अथवा परशू[6]

शोषकवर्गक विरुद्ध आत्मदाहक अग्नि मे झरकैत सर्वहाराक स्वर मे 'धूसर' 'पीपल' 'तानल' 'तमसाएल' महाजनी दर्प केँ चूर्ण-विचूर्ण करबा मे केहन आक्रोश आ दृढ़ता दैक, से द्रष्टव्य थिक —

हमरा सभ ओहिना नहि नष्ट होएब
तोरहि नामेँ करैत जाएब आत्मदाह
एकक पदाति दोसर
तकरा बाद तेसर, तदुपरान्त चारिम
तत्पश्चात् पाँचम
एही क्रमे हजारक हजार.....
आत्मदाह करैत जाएब हमरा सभ[7]

एहि आत्मदाहक कारण केँ स्पष्ट करैत अग्रिम पाँती मे कवि कहैत छथि—

हमरा सभक चिताधूम कए देतहु तोरा अकच्छ
पहुँचि अन्तरिक्षमे भए जेतहु प्रलयंकर मेघ
प्रचंड घनघटाक ओ दुर्दान्त झाँप महाझाँप
कए देतहु तोहर दर्पकेँ चूर्ण विचूर्ण[8]

एहि प्रकारेँ स्पष्ट अछि जे कविक वाणी युगक घटाटोप सँ घेरल मानवताक व्याख्या केँ नव आधार दैत अछि। मानवताक नाम पर घोर व्यक्तिवादक दर्शन देनिहार एवं मानव-मूल्यक नाम पर अराजकताक प्रचारक तथाकथि

Scanned with CamScanner

नव धारणा सँ भिन्न यात्रीक कविता युगीन दृष्टिकोणक आन्तरिकता सँ सम्बद्ध अछि।

समान श्रम आ समान भोग पर यात्रीक अटूट आस्था छन्हि। तेँ ओ 'श्रमशील मानवजाति' सँ कहैत छथि —

धन्य हे श्रमशील मानव-विश्वभरि मे व्याप्त
धन्य तोहर जाति!
. . . .
हृदयमे अछि एक केवल तोहरेटा भक्ति
आन देवी-देवता दिश नहि ननइ अछि माथ
आइ नहि तँ काल्हि दानवदलक करबह अवस्से उच्छेद
कृषक श्रमिकक जीवनी केँ बनबिहह पुनि वेद[9]

यात्रीजी अभाव-अभियोगक जीवन सँ ग्रस्त लोकक मनोबल केँ ऊँच रखैत संघर्षक लेल ललकारा दैत छथि —

अन्न ने है, कैंचा ने है, कौड़ी ने है,
गरीबक नेना कोना चढ़तैक रे?
उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने,
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे![10]

देशक स्वतंत्र भेलाक उपरान्त देशवासी सभ अपन सरकार सँ बड़-बड़ आशा लगाओने छल। मुदा ओ आशा आशे रहि गेल। देशक हाकिम-हुक्काम एवं तथाकथित नेता लोकनि अपन-अपन घर भरबाक पाछाँ, अपन घोघि बढ़एबाक बेगर्ता मे लागि गेलाह। सरकारी नीति सेहो जमीन्दार आ पूंजीपतिक पक्ष मे छलैक। यात्रीजी 'देश दशाष्टक' शीर्षक कविता मे उपर्युक्त समस्त भाव केँ बड़ नीक अभिव्यक्ति देलन्हि अछि। द्रष्टव्य थिक किछु तत्संबंधी पाँती —

छन्हि तिनरंगा घोघ, ताड़ सन देह
रूच्छ अलच्छा पएर, कतहु नहि नेह
महगिक बड़का खरड़ा नेने ठाढ़ि
की होएबे स्वाधीन रहिसँ बाढ़ि॥

स्वतंत्र भारत मे यात्री केँ सर्वत्र 'त्रिमूर्ति'क दर्शन होइत छन्हि —

बनिआ-लीडर-अफसर तीन त्रिमूर्ति
करए रहला अछि अपन मनोरथ पूर्ति
अपना लए सभ अनका हेतु बड़ौर
तइपर फाटन्हि रहि रहि कते बुकौर[12]

Scanned with CamScanner

सम्पूर्ण देश मे 'अपनाय स्वाहा'क रंगताल देखि कवि कृषकवर्ग कें जगबैत छथि। ओ सभ कें एकमतिआ भए अपन दुखक त्राण लेल 'लाले लाल निशानं' क झण्डा फहरएबाक हेतु आह्वान करैत छथि—

ऊठह भाइ किसान!
अपन दुक्ख अपने नहि बुझबह तँ के बुझतह आन
आबह तों सबतरि फहराबह लाले लाल निशान
ऊठह भाइ किसान!
जमिन्दार पर जकर नजरि छइ, पूँजीपति दिस ध्यान
तकरा बुतें कोना कए हेतइ गरिबहाक कल्यान।13

उपर्युक्त विवेचन ओ विश्लेषण सँ स्पष्ट होइत अछि जे यात्रीजीक कविता मे प्रगतिवादक सभ तत्व मुखरित भेल अछि। असमानता, अन्याय-अत्याचार एवं शोषणक जाप्प सँ लए ओकर विरोध धरिक साहसिकता हिनक पद्य मध्य द्रष्टव्य होइत अछि।

सन्दर्भ- संकेत

1. चित्रा : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (अ. भा. मै. साहित्य समिति, प्रयाग), पृ-80
2. पत्रहीन नग्न गाछ : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', पृ-74
3. चित्रा : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (अ. भा. मै. साहित्य समिति, प्रयाग), पृ-86,87
4. तत्रैव, पृ-7
5. पत्रहीन नग्न गाछ : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', पृ-21
6. तत्रैव, पृ-13,14
7. तत्रैव, पृ-15,16
8. तत्रैव, पृ-16
9. चित्रा : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (अ. भा. मै. साहित्य समिति, प्रयाग), पृ-84
10. तत्रैव, पृ- 8,9
11. तत्रैव, पृ- 77
12. तत्रैव, पृ- 76
13. यात्री-काव्य-विवेचन : डॉ. यशोदानाथ झा, पृ-59

Scanned with CamScanner